परिचय (Introduction)

कृषि शब्द अंग्रेजी शब्द 'Agriculture' का पर्यायवाची है, जो लैटिन भाषा के Ager एवं Culture से बना है। Ager का अर्थ खेत का टुकड़ा एवं Culture से तात्पर्य खेती करना से है। अर्थात किसी जमीन के टुकड़े पर कार्य करना कृषि (Agriculture) जिसका उद्देश्य फसल प्राप्त करना है। इस क्रिया मे कला - कौशल एवं विज्ञान सहायक सिद्ध होता है।

कृषि मानव का अति प्राथमिक व्यवसाय है भूगोलवेत्ता फसलोत्पादन एवं पशुपालन दोनों की कृषि के अन्तर्गत सम्मिलित करते है। ब्रुस (Brumphres) जैसे विद्वान ने कृषि को पादपो एवं पशुओं का पालतूकरण (Domestication of Plant and Animal) कहा जाता है। इन्होने कृषि को भूमि के शोषण पूर्ण व्यवसाय (Exploitative occupation) की संज्ञा दी। परन्तु वास्तव में कृषि पादप एवं पशुओं की विकास की एक विधि है। पृथ्वी के धरातल पर कृषि सबसे अधिक व्यापक आर्थिक क्रिया है। मानव ने स्थानिक तौर पर भिन्न भिन्न पर्यावरणीय दशाओ में कृषि व्यवस्था को अपनाया जो विभिन्न तकनीकी एवं विधियों के द्वारा फसलों की विविधता तथा पशु - पालन मे परिलक्षित होती है। विभिन्न संदेशों मे भौतिक एवं जलवायुविक दशाओ तथा सांस्कृतिक अभिरुचियों के अनुसार भोजन उत्पादन करते है। विशिष्ट कृषि को अब भी प्रभावित करती है। तथापि एक समान जलवायु वाले क्षेत्रों मे इनके विशिष्ट सांस्कृतिक लक्षणों के

कारण भिन्न कृषि पद्धतियाँ प्रचलित है। अतः फसलोत्पादन, पशुपालन एवं अन्य विशेषताओं के संरक्षण एवं प्रादेशिक विश्लेषण के लिए कृषीय भूदृश्यों का भौगोलिक वर्गीकरण आवश्यक हो जाता है।

सामान्य तौर पर कृषि प्रकार एवं कृषि वर्गीकरण में अंतर नहीं माना जाता है। किन्तु भूगोलवेत्ता व्हिट्लसी ने न केवल इन्हे स्वतंत्र रूप से परिभाषित किया वरन उनकी विशेषताओं को भी स्वतंत्र रूप से बताया है व्हिट्लसी के अनुसार "कृषि प्रकार का विश्लेषण कृषि विधि पर आधारित है जबकि कृषि प्रदेश का विश्लेषण कृषि - उपज पर आधारित है।"

⇒ कृषि प्रादेशीकरण की योजनाएँ (Schemes of Agricultural Regionalisation)

अनेक भूगोलवेत्ताओं ने विश्व के कृषि का वर्गीकरण करने का प्रयास किया है। जिनमें चिशोल्म (Chilolm 1889), हान (Hahn 1892) स्मिथ (Smith 1913), फिन्च एवं बेकर (Finch & Baker (1917), सेपर (Saper 1924), एंजिलब्रेश्त (Engel Brecht 1930) उल्लेखनीय है जिन्होंने विभिन्न उपागमों का प्रयोग कर कृषि प्रदेशों का वर्गीकृत किया। किन्तु इन सभी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण डर्वेन्ट व्हिट्लसी (Darwent Whittelesey, 1936) है।

जॉन्स वैलिकगेरन ने कृषि प्रकारों का प्रारंभिक ड्राफ्ट तथा मानचित्र तैयार किया था। इनके विचारों में संशोधन कर ह्विटलसी ने वर्गीकरण प्रस्तुत किया।

⇒ ह्विटलसी के वर्गीकरण का आधार (Basis of classification of whittiesy)

ह्विटलसी ने विश्व के कृषि प्रदेशों का सीमांकन निम्न पाँच तत्वों के आधार पर किया है

(A) फसलों एवं पशुओं का सह सम्बन्ध,
(B) भूमि उपयोग क्षमता एवं उत्पादन विधि,
(C) कृषि से उत्पादित वस्तु के उपयोग का ढंग,
(D) कृषि कार्य में सहायक उपकरणों, यंत्र तथा आवासीय आदि सम्बन्धी दशा है
(E) कृषि उद्यम संस्थना या कृषि में श्रम, पूंजी, संगठन, आदि के विनियोग की मात्रा

⇒ ह्विटलसी द्वारा वर्गीकृत कृषि प्रकार एवं कृषि प्रदेश (Agricultural Typology & Agricultural Regionalisation by Whittlesy)

इन्हीं उपरोक्त आधार को ध्यान में रखकर विश्व को 13 कृषि प्रकारिकी में विभक्त किया है, जो निम्नलिखित है!—

Scanned with CamScanner

(i) चलवासी पशुचरण (Nomadic Herding)
(ii) व्यापारिक पशुचारण (Live stock Ranching)
(iii) स्थानांतरित कृषि (Shifting Cultivation)
(iv) प्रारंभिक स्थानबद्ध कृषि (Rudimental Sedentry tillage)
(v) वाणिज्यिक पशुचारण
(vi) जीवन निर्वाहन सघन कृषि
(vii) बागाती कृषि (Plantation Agriculture)
(viii) भूमध्यसागरीय कृषि
(ix) दुग्ध कृषि
(x) फल एवं सब्जी कृषि
(xi) मिश्रित कृषि
(xii) सामूहिक कृषि
(xiii) राज्य पोषित कृषि

इसके विपरीत कृषि प्रादेशीकरण का आधार कृषि उत्पाद है। किन्तु ऊपर वर्णित पाँच आधारों के आधार पर D. Whittelesey ने विश्व को 13 कृषि प्रदेशों में भी विभाजित किया है। 1936ई में (व्हिटलसी द्वारा) कृषि प्रदेश इस प्रकार है।
(A) चलवासी पशुचारण प्रदेश
(B) व्यापारिक पशु पालन
(C) स्थानांतरित कृषि प्रदेश